प्रश्न :- रीतिकाल का वीरकाव्य के प्रमुख कवि और उनका साहित्य बतायें ?

उत्तर :- शेषभाग :-

2. मान-कवि-

इनका पूरा नाम मानसिंह था। इनकी रचना 'राज-विलास' के आधार पर इन्हें मेवाड़ के महाराणा राजसिंह के समकालीन माना जा सकता है। कुछ विद्वान् मान को महाराणा राजसिंह का राजकवि मानते हैं। डॉ० रामानन्दसिंह के अनुसार- "मान कवि किसी राजा के आश्रित कवि नहीं थे और न उन्होंने आश्रयदाता की प्रशस्ति-गान के रूप में इस काव्य की रचना की थी।" 'राज-विलास' 18 विलासों का वीर-रसात्मक वृहत् काव्य है, जिसके आरम्भ में सिसोदिया वंश का संक्षिप्त इतिवृत्त है। ग्रन्थ की कथा महाराणा राजसिंह के जीवन की प्रमुख घटनाओं से संबंधित है। इसमें राजपूतों और दिल्ली के मुगलों अथवा गुजरात के सूबेदार के बीच हुए दस युद्धों का वर्णन किया गया है। ये सभी युद्ध राजपूत राजाओं की स्वतन्त्रता की रक्षा की पहचान हैं। युद्धों के वर्णन में कवि ने पूर्व-परिपाटी का ही अनुसरण किया है, शिल्प की दृष्टि से शास्त्रानुमोदित प्रबन्ध-काव्यों की सभी रूढ़ियों का पालन किया गया है,

3. गोरेलाल (लाल कवि)- ये महाराजा छत्रसाल के राज्याश्रित कवि थे, इनके पूर्वज आन्ध्र प्रदेश के राजमुंदरी जिले के नृसिंह-क्षेत्र धर्मपुरा के निवासी थे। महारानी दुर्गावती द्वारा प्रदत्त संकोरी (मध्य प्रदेश के दमोह जिले के अन्तर्गत) ग्राम में इनके पूर्वज आकर बस गये थे, गोरेलाल

का जन्म वहीं सन् 1618 ई० में और मृत्यु 1710 ई० में हुई थी। इनकी दस रचनाएँ प्राप्त हुई हैं — (1) छत्र-प्रशस्ति (2) छत्र-छाया (3) छत्र-कीर्ति (4) छत्र-छन्द (5) छत्रसाल-शतक (6) छत्र-हजारा (7) छत्र-दंड (8) छत्र-प्रकाश (9) राज-विनोद तथा (10) बरवै। एक अन्य ग्रन्थ 'विष्णु-विलास' भी लाल कवि के नाम से प्राप्त हुआ है, लेकिन वह गोरेलाल का न होकर कोटा-बूँदी वाले छत्रसाल हाड़ा के दरबारी कवि 'लाल कवि' का है, जो गोरेलाल से भिन्न है। उपर्युक्त सभी ग्रन्थों में 'छत्र-प्रकाश' रीति या शृंगारकालीन वीर-काव्य की मूर्धन्य रचना मानी जाती है। इसकी सबसे बड़ी विशेषता यह है कि प्रशस्ति-काव्य होते हुए भी इसमें ऐतिहासिकता तथ्यों का सही निर्वहन किया गया है। यहाँ तक कि शेर अफगान के विरुद्ध, जिस युद्ध में महाराजा छत्रसाल को भागना पड़ा था, उसका भी उल्लेख कवि ने इस ग्रन्थ में किया है। इस वर्णन के द्वारा ही कवि की प्रामाणिक दृष्टि का परिचय प्राप्त होता है। यह प्रबन्ध-काव्य 26 अध्यायों में विभक्त है- प्रथम और द्वितीय अध्याय में गणेश- सरस्वती की वन्दना के उपरान्त बुन्देला जाति की उत्पत्ति का वर्णन करते हुए महाराजा रामचन्द्र से लेकर हेमकरण तक तथा उसके बाद छत्रसाल तक के बुन्देला राजाओं का उल्लेखात्मक विवरण दिया है। तीसरे अध्याय में छत्रसाल की पूर्व-जन्म की काल्पनिक कथा का वर्णन किया गया है। चतुर्थ अध्याय में छत्रसाल के बाल्यकाल का सुन्दर वर्णन किया गया है। इसके आगे चम्पतराय एवं

मुगल-सेना के बीच की घमासान लड़ाई, चम्पतराय की सपत्नीक आत्महत्या, छत्रसाल की औरंगजेब से कृपा-प्राप्ति का प्रयास आदि का वर्णन किया गया है। इसके उपरान्त छत्रसाल शिवाजी से मिलते हैं। शिवाजी उन्हें सलाह देते हैं—

"करौ देश कौ राज छतारे। हम तुम तै कबहूँ नहीं न्यारे॥
दौरि देस मुगलन को मारौ। दबरि दिल्ली के दल सँहारौ॥
तुरकन की प्रतीति न मानौ। तु केहरि तुरकन गज मानौ॥"

आगे के अध्यायों में छत्रसाल द्वारा शिवाजी की सहायता से स्वाधीन साम्राज्य की स्थापना और मुगलों के साथ हुए संघर्षों का चित्रण किया गया है। छत्रसाल में जहाँ एक ओर छत्रसाल के पौरुषमय जीवन का चित्रण किया गया है, वहीं दूसरी ओर उनकी राजनैतिक उपलब्धियों का वर्णन भी किया गया है। इस प्रकार इतिहास और काव्य का अपूर्व संगम यहाँ दृष्टिगोचर होता है। वीर-काव्य के अध्येता डॉ० टीकमसिंह तोमर ने इस काव्य का यथार्थ मूल्यांकन करके कवि का गौरव-वर्णन करते हुए लिखा है—"रीति और चारण-शैली को न अपनाकर उन्हें (लाल कवि) ने अपना मार्ग अलग ही निश्चित किया है, जिसमें उन्हें पूर्णरूप से सफलता मिली है।"

शेषभाग बचा है

पता:—
डॉ० समदर्शी कुमार
विभाग- हिन्दी (S.R.A.P.C) (B.R.A.B.U.M)
मो० न०- 7909046087
दिनांक- 18.02.2022